

ॐ गजसायनिमः सर्वस्य नमः ॥

2201 I

वल्गा विष्णुसिद्धि ॥ व न यथा हाइन समायामि ॥ न य न युहा
लोनीः कवरी वल्लुवात्रनी ॥ तं दव विधानानीसा नी वल्लुवात्रनी ॥
॥ ॥ यागिया लाहानन ला दू काय वाक् ॥ ॥ गुत्र ॥ ॥ यूर्य दद्याज ॥
इ ४ रविय दानि वात्रनि ॥ गुत्र यूर्य दसादन ॥ पिज सा नि क जानि र्य
नाहिम ॥ गुत्र नमस्कायाय ॥ ॥ अथ न्दु मन्तलायादि ॥ आस ॥

इलः अर्थ यात्र यज्ञा ॥ तून सधि जास यज्ञा ॥ वलि ॥ न ज हं ट वली
गट्ट १ स्वाहा ॥ ॥ मालु नित्य थ ७ ॥ थ डार्न क व वयाय ॥ न ॥ द्रां द्रां
दू साम दू मान ॥ कर्वे वि शम ग्म ॥ गि वासाया च याः थ वा थाः दा धां द्रां
दहि न्म का ला या डा वाच ॥ ॥ दा हा न स्या न १ आ नू नू ग्व १ ॥ इ या डा प्र
य ॥ ७ ० ति शम यज्ञा ॥ विधा ॥ ॥ वलि ॥ १ हं र सें ट वलि गट्ट १ स्वाहा ॥

[illegible][illegible]

रुडग्राव अतिशुल्ल। दक्षिण। वामरुक्क कमधुच। कर्त्तिकावा
 लीन। नाथं। नागजम्हायवीतकं॥ ननर्मयरीधनं। हाहा
 लप्रमत्तुषिना। मनुमागधर्माथः॥ शुद्धायनम॥ ॥ सिद्धा
 सतथिनंदवी। प्रकावर्तु निराचनी। यगुहृशासुवलाच॥ ॥ नम
 लयनृवाशिन्या। विन्दूपातधर्मासी। यार्थे शुर्मयरीधना

हा हा हसननन ॥ धर्मा दवीनसमान ॥ धनवर्धनम ॥ नमो
 वायु दिंथ वा दं ध्याग धामन दू सर्वन सब सर्व दूर स जा मडन
 धज पाइ की ॥ जा जा दू वां वां वू वू मू शा स रु द म हा न र
 वायु स धां वां धू धू मू शा ध मू धर्मा दवी स ही ना य प र
 पाइ की ॥ धन ॥ धू धू वां ह द्या दि ॥ दिवा शि स सा हा ॥ शा व
 शि र वा य वा र्क व द ॥ धू व क व द्या य द ॥ धा वी न नु या य व व द ॥ धू वा

अस्माकं हृदये ॥ विन्दु मज्जादया ॥ नृधुर्दयाय नमः ॥ कौटुम्भीयं स्यात्
ला ॥ श्रीं दू शरवाय वासु ॥ नृधु कवचाय नमः ॥ नृधु नृधु गायत्रय वसु ॥
यानी मज्जा ॥ वसि ॥ नृधु यत्र दि यत्र यथा माहा काल शृणु या लाय धुर्मद
वीसदी नाय नृधु कौ ॥ नृधु १ व १ ल १ य १ रवा कि १ नृधु १ म १ नृ १ हृ १ हृ १ व १ लि १
क १ स्वाहा ॥ सा नितिकः कृति कवचिः नृधु वसिः स्नानः वनः सिधुः नृधु

स्नानः नृधु वसिः धुपः दीपः धुति ॥ मनुजः नायः नृधु ॥ ११ ॥ कौ १०
॥ व्याहृ ११३ ॥ धो ११३ ॥ नृधु नृधु ॥ नातु ॥ नृधु ति यै क्व नृधु दि गायत्रय
समायुक्त ॥ नृधु नमः श्रुति मया मज्जा गायत्रय वसु ॥ नृधु मासना वाइ वसु
न्यासः नृधु गायत्रय ॥ नृधु नृधु शक्ति रयादि ॥ नृधु वाहन ॥ ॥ ध्यान ॥ ती मरु
ती ति हृदये नृधुः दिव्य जीव गदावरीः सर्व नृधु वात वासु ॥ सिन नृधु
य विपरीत ॥ नाना लयन ॥ नृधु लयनी ॥ सिन नृधु ॥ हृ १ ॥ नृधु नृधु क मला लयनी ॥

तिनीन्द्रो वातिनीयमहानाधिद्रुत्सादा ॥ ५॥ वसि ॥ विम
कवेम व्रीक्तुनयतक्यलैरववसिग्टद्र ॥ १ ॥ माहा ॥ यकूडाकूद्रक
म्या ॥ ॥ ० ॥ रुद्रधननीवासिन ॥ साम्या ॥ ० ॥ वरुपकचि ॥ साम्या
काननीवासिन ॥ मातत्राकूद्रकूय ॥ ० ॥ गमनामधियास्यय ॥ वि
व्रीत्तुनासुथ ॥ यानादिगविदिगिवावमिना ॥ सर्वस्युपज

स ॥ वृत्तिग्टद्र ॥ १ ॥ रुद्रवत्नीग्टद्र ॥ १ ॥ सादा ॥ ॥ ० ॥ यतत्रुद्रकूयलैरवा
वसिग्टद्र ॥ १ ॥ सादा ॥ ॥ ॥ यतत्रुद्रविनीयागिनीवत्नीयववमकुन
यक विथागिनीनयो ॥ ० ॥ डाः ॥ रुतडाः ॥ मागडाः ॥ सँदारवडाः ॥ गलडाः
सँदारडाः ॥ यक वि ॥ डा ॥ गिनीनी कूचयी ॥ कूचयी ॥ गाययी ॥ रुकश
यी ॥ वतुयववदसफासुनानवा कूचयीनीनियद्गसनीता ॥ यथाय
यनीता ॥ ममसिद्धिकुर्वन्तु ॥ ३ ॥ रुद्रसादा ॥ ग्टद्रुद्रवत्नीग्टद्र ॥ १ ॥

स्वाहा ॥ ॥ अरवागावममाव्युक्तितनीययाः मायनीवीद्रुदस
॥ ऊं कारकायमदताः वा श्रीं नमस्तुलमयायात्री चक्रविशः शाना
॥ थस्यवठममायवसमनीगाः अरवा नातिममके किं ॥ त्वेदवैसकि
म्मा नातिगवठाकलमरवा माग ॥ नाथचक्रवलिगट द्वा १ स्वाहा
॥ हु मम ॥ हु मम ॥ नगायवा थगुभवाः अरवा वासरी धया ॥ वावा

कृषकवृशवाः असा नमा ॥ न मंदयः नानाप्रयधया जयिः वद
नविधिधनिचः त सर्वयिसंतुचकाः वगीगट द्वा १ तु सर्वनवति
गट द्वा १ स्वाहा ॥ धूवा ॥ दीयः संकत्य ॥ वतिक्का ॥ मनुत ॥ ज्ञाय ॥ गीती
हैं ॥ मुं जं हूं १ ॥ ज्ञां ज्ञां द्रूं १ ॥ ऊं शं स १ ॥ धनीः नत ॥ नयन
ग्रामनाम्मा सध हिः ह्मथि किलवनः गुष्कुरम्मि र्वीः दसास्य

वर्कसालवसितप्रकृष्टवर्गः संपुर्णः ॥ हस्तकया न माता ॥ ८ ॥
नम्रधिरवातद्वेषनामी ॥ निर्वीरि मस्य वास्यं शक्तिः ॥ तम
प्रनित्तनाथपिसाचा ॥ १ ॥ ४३ ॥ निम्नांसददि हसमनित्त
वाकाटि विद्युन्नुपुतासा ॥ यक्षमि न हनु श्रुति शासमयदा
यश्च कलावा ॥ हस्तध्यातमानस्युकारवात्रक नूदति क्रो

उस्रदिर्यः ॥ दविर्यं शिखारवासकजीगान्नमत्तुनताथा ॥ १॥
मार्गनीधवतुनीसः ॥ प्रनित्तनीचकुवत्यादिमादः ॥ वीरशाया
वानसिकतेत्यदनीय ॥ कातरित्यामि प्रम्यदः ॥ विजयनयवी
सतिसमयदायदीदीस्यमानः ॥ दक्षयाकि कारु कारवीदसिन
सहसाग्राही मयाज्ञानमस्तु ॥ ॥ श्रुगंधिदि ॥ वसिती सज्जन ॥ ॥

नमः ॥ ॐ क्रोडिंद्रं क्रोडिंद्रं नमः ॥ ॐ शसमं तु तया नित्यं ॥ ॐ वाइकी
वति वीय ॥ ॐ क्रोडिंद्रं सर्वं तु तित्ती तु न ॥ ॐ मदा त्वा तु गिनी मदा
तु न ॥ ॐ मदा त्वा तु मीः मदा त्वा तु य ॥ ॐ स्वज मदा री कं ॥
मीः मदा कं ॥ ॐ मदा तु न म ॥ ॐ मदा तु न म ॥ ॐ मदा तु न म ॥ ॐ मदा
नी तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥
न ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥

ला ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥
नित्यं ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥
तया नित्यं ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥
क्रोडिंद्रं ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥
न ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥ ॐ मदा तु न ॥

[illegible]

यस्य गतिरित्येव कौः। तद्वि कर्तुं जडावर्धशब्दसमाह्वयः स्थानादीनां
शब्दसङ्गः। न यत्तु यदेव सर्वसंयुक्तमयम्। विम्वरि यद्वागं
नः। उमन्ववन्तयः। शक्तिमाध्यायस्य। कोउक्तं। शक्तिमध्यास
गन्धयन्त्रितया नुवा कान्तिवासः॥ शत्रुर्गन्धदि॥ वलिवीसज
नः। थासः। क्वायः। समयः। कर्तृकार्त्त॥ ६॥ तिथानन्वसा नित्य

बलाचर

2201 I

१ अंक था दूय तदा प्रः हवर्त्तिन इव प्रः सानूनासि काव
ननूनासि चः नकायस्यः प्रकायातवत् ॥ ॥ द्रयाद्वि
हा नः विचार्यः गमय न विचयः प्रादानवत् प्रकृत्यानामी

ॐ नमः ॥ शुभं लं ॥ नमः ॥ ॐ नमः ॥ शुभं लं ॥ नमः ॥ ॐ नमः ॥ शुभं लं ॥ नमः ॥
तैः कृतं यथागिनीः ॥ ॐ नमः ॥ शुभं लं ॥ नमः ॥ ॐ नमः ॥ शुभं लं ॥ नमः ॥
विनाथं गतं ॥ यथागिनीः ॥ यथागिनीः ॥ यथागिनीः ॥ यथागिनीः ॥ यथागिनीः ॥
कागुषागिनीः ॥ वक्रं संयुज्जितानां ॥ विनिर्मुद्रलानां ॥ ॐ नमः ॥ शुभं लं ॥ नमः ॥
ॐ नमः ॥ शुभं लं ॥ नमः ॥ ॐ नमः ॥ शुभं लं ॥ नमः ॥ ॐ नमः ॥ शुभं लं ॥ नमः ॥
॥ विनिर्मुद्रलानां ॥

तव तयं लं ॥ तव तयं लं ॥ तव तयं लं ॥ तव तयं लं ॥ तव तयं लं ॥ तव तयं लं ॥
हमि रुना लाकयाला ॥ रुनीन्दा ॥ यथागिनीः ॥ यथागिनीः ॥ यथागिनीः ॥ यथागिनीः ॥
सहिता मातया ॥ रुनीन्दा ॥ यथागिनीः ॥ यथागिनीः ॥ यथागिनीः ॥ यथागिनीः ॥
रवयया ॥ यथागिनीः ॥ यथागिनीः ॥ यथागिनीः ॥ यथागिनीः ॥ यथागिनीः ॥
नायका ॥ यथागिनीः ॥ यथागिनीः ॥ यथागिनीः ॥ यथागिनीः ॥ यथागिनीः ॥

मसंखट ॥ दुःखसानीकर्त्रे निर्यं ॥ नृन नासर्वाथसाधका ॥ सर्वार्थविमाय ॥ स
र्वेष्वद्वयद्वयवर्ष ॥ सर्वसात्त्विककर्त्रे निर्यं ॥ सर्वकामद्वयवर्ष ॥ नृन नासर्वाथसाधका ॥
विसर्जनं ॥ वसीकृत्य ॥ नृन नासर्वाथसाधका ॥ सर्वकामद्वयवर्ष ॥ नृन नासर्वाथसाधका ॥
धृष्टव्यवस्थावनसमाचन ॥ ७ ॥ १३४ ॥ नृन नासर्वाथसाधका ॥ सर्वकामद्वयवर्ष ॥ नृन नासर्वाथसाधका ॥
मृगम ॥ नृन नासर्वाथसाधका ॥ सर्वकामद्वयवर्ष ॥ नृन नासर्वाथसाधका ॥ सर्वकामद्वयवर्ष ॥
नृन नासर्वाथसाधका ॥ सर्वकामद्वयवर्ष ॥ नृन नासर्वाथसाधका ॥ सर्वकामद्वयवर्ष ॥ नृन नासर्वाथसाधका ॥
नृन नासर्वाथसाधका ॥ सर्वकामद्वयवर्ष ॥ नृन नासर्वाथसाधका ॥ सर्वकामद्वयवर्ष ॥ नृन नासर्वाथसाधका ॥
नृन नासर्वाथसाधका ॥ सर्वकामद्वयवर्ष ॥ नृन नासर्वाथसाधका ॥ सर्वकामद्वयवर्ष ॥ नृन नासर्वाथसाधका ॥
नृन नासर्वाथसाधका ॥ सर्वकामद्वयवर्ष ॥ नृन नासर्वाथसाधका ॥ सर्वकामद्वयवर्ष ॥ नृन नासर्वाथसाधका ॥
नृन नासर्वाथसाधका ॥ सर्वकामद्वयवर्ष ॥ नृन नासर्वाथसाधका ॥ सर्वकामद्वयवर्ष ॥ नृन नासर्वाथसाधका ॥

[illegible]

[illegible][illegible]

ॐ नि की न प्रवलि ॥ न ना ग द वलि ॥ आदि त्या य न म ॥ न्या स व रा
वी य ॥ ॐ न म स सान कू डार्थ न म ॥ न्या स ॥ ॐ न स क म द द ॥ ॐ न नो सि
वा य न म ॥ ॐ ॐ ॐ शि व थ न न ॥ ॐ ड ड ड न रा द वा इ का ॥ ॐ न न म
न म ॥ ॐ ॐ ॐ न न य यो न म ॥ ॐ न क न द य न म ॥ ॐ डं डं न ध र नि द
न ना के ॥ वा इ का ॥ ॐ न न न ग र ग दि वा इ का ॥ न स क म द द ॥
न न न य य न ॥ न न स थि न म य न ॥ व रि धा न न ॥ न डं डं डं न न
द ॥ न्या स न ॥ ॐ न्या स न कि य न म ॥ न न न लि ली न न न वा य न म ॥
न न वा इ का ॥ ध्या न ॥ न क व का नि न न व ॥ को ध न य य न म ॥ न न

म र्क सी का ण ॥ न दि यू र्थ र्थ कर ॥ म र्क दि सा न र्थ र्थ ॥ वा य्या स र्क
नि त्ति वि र्क ॥ न ॥ न म न र्थ र्थ ग द र्क र्क ॥ क नि का वा य न न ॥ न र्थ र्थ
न न न वि ॥ न न न ना थि क य न म ॥ म थि ॥ स र्क न न न लि ली न न
वा य न म ॥ न न न न ग र्क न्या य न म ॥ न क ॥ न न न न न्या य न म ॥ न न क
ध र्क न्या य न म ॥ न न ॥ न न न न न न्या य न म ॥ न न ॥ न न न न न्या य न
म ॥ न न ॥ स र्क न न न्या य न म ॥ न न न ॥ न स स न न थि य न म ॥ न न ॥ न न
न्या य न थि य न थि ॥ न्या य थि ॥ न्या य ॥ न्या य न न्या य न स र्क न स र्क न्या य न ॥
न न ड न्या य ॥ न काना थ म द र्क न्या य न म ॥ व रि न न ॥ न न न न न न्या य न ॥

[illegible]

कवदियसुनामसिलावती ॥ १ ॥ जमकस्यसीतिक्रम ॥ स्वाहा ॥ समसानवा
 नवा ॥ १ ॥ ॐ नमः ॥ समस्तदेवता ॥ देवतामातासममानाधियति ॥ शिवा ॥ १ ॥
 नः ॥ काकः ॥ ड ॥ त्रिकः ॥ त्रितीया ॥ गकिनी ॥ यकनी ॥ नागः ॥ नकुली ॥ गध
 वः ॥ किन्नरः ॥ गन्धर्वः ॥ कवचिनी ॥ शिवः ॥ १ ॥ ॐ नमः ॥ शिवा ॥ १ ॥
 द ॥ १ ॥ ॐ नमः ॥ कवचिनी ॥ शिवः ॥ १ ॥ ॐ नमः ॥ शिवा ॥ १ ॥
 कस्यसीतिक्रम ॥ १ ॥ ॐ नमः ॥ शिवा ॥ १ ॥ ॐ नमः ॥ शिवा ॥ १ ॥
 मयाकरव ॥ १ ॥ ॐ नमः ॥ शिवा ॥ १ ॥ ॐ नमः ॥ शिवा ॥ १ ॥
 क्रम ॥ १ ॥ ॐ नमः ॥ शिवा ॥ १ ॥ ॐ नमः ॥ शिवा ॥ १ ॥

ॐ काया नृत्ययादा द्यादि॥ नागा कवगाय॥ ॐ गुरुद्वयगुरुयसाद्य॥ नाकि
 नाविनिधकित्रय॥ रक्षिरकिनीर्वधकीत्रय॥ युतिनीर्वध॥ कित्रय॥ सिद्धि॥
 त्रुतिनीर्वधकित्रय॥ इया हाथ गानु सर्वधर्वकित्रयय॥ ननसांवा
 विना जलु नेत्रयसाद॥ जे खट ५ द्वादश ३३॥ ॥ धमक डार यायगात्र॥
 ॐ नमथागि ४ वना नम॥ कुं कुं झां झां कुं सर्वय १६ १ नम॥ ॥ स॥ ॥ यज्जदेन॥
 कुं १६ काद ५ ॐ नमो १ ॐ नमो॥ गुरु काशमाजी द्वाद ॐ नम॥ कुं १० हनुमंगा
 यद्द स्वाहा॥ य ४३ नवन ०॥ नान॥ त्रुनर्वन॥ क ४ व नु धक गान का सवामादि॥
 न॥ यतिवृत्तयिसारि संयवियम॥ प्रमाद नावाकत्र॥ लाला लाल मगभक

कामलकना विमृ॥ यदुलकना॥ वृत्तचक्रकयात्रमीदिन॥ गला त्रयासिर्वहत्र
 व॥ ॥ श्रीसूतन॥ नृध्यात्र रुदयाय॥ ज्ञात्मसिर्वनी॥ नमो नरुदत्रयथा ज्ञेसा
 रुन॥ विसर्जनवत्रिकायदिगस॥ समययाः कर्नकवाय॥ ॐ नमि समभनसीति
 वल्ल्यावन॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ नमो चक्रु कामनम॥ गगनसंलग्नयात्रि॥ काद १०
 यासगश्रयताः १०॥ यात्रश्रसा १०॥ धनसकादायमइ॥ थकायदका॥ सगत
 नथल॥ याक दूइ॥ धनकनइइ॥ त्रिकनइइ॥ जा १ थय॥ ज्ञादायाडा॥ सगतध
 मक॥ याथसदयक॥ दाः क २॥ धन॥ कनुसर्वत॥ तत्रथन्य॥ कडानन
 कड्य॥ यलतिनधत्रवाक्य॥ वि कातन॥ ज वाक्य॥ दानमक्य॥

त्रैलोक्यविवर्तकस्य दामिवधनः सुद्विद्यातत्त्वः ज्ञोऽप्य
 त्वत्त्वसु लदेहं साधयामि स्वाहा ॥ मायाकला ज्ञविद्याया
 गकारिणिनियतिपूत्रवतत्वं ह्यविद्यातत्त्वेनः सप्रदहं
 साधयामि स्वाहा ॥ त्रैलोक्यं १० प्रकृतिर्जदं कायमनावृद्धि
 सप्रतत्त्वकवृत्तिरकायानक्यामिवाग्रवद्विद्याया गत्रैव

प्रसगन्धः आकाशमनत्रैलालिलयथातत्त्वं ह्यविद्यातत्त्वेनः
 प्रदहं साधयामि स्वाहा ॥ त्रैलोक्यं १५ कं २५ यं १० सिवध्वं
 क्सदा विवधुः सुद्विद्याः मायाकला ज्ञविद्याकला
 कारिणिनियतिपूत्रवतत्वं ह्यविद्यातत्त्वेनः सप्रदहं
 ज्ञोऽप्य सर्वतत्त्वसु नजीव साधयामि स्वाहा ॥ ॐ नितत्त्वसाधनं ॥

२३ नमः ३

२३ ३